- फूल लगने से पहले फसल में बालयुक्त कीड़े लग जाते हैं जो पत्तों को बर्बाद कर देते हैं।
- कीड़ों की रोकथाम के लिए नीम के घोल का छिड़काव किया जा सकता है। यह घोल 5 ग्राम प्रति लीटर से तैयार किया जाता है।

फसल कटाई का प्रबंधन

फसल पकना और उसकी कटाई :

- बुआई के लगभग 140 दिनों बाद फसल पकने लग जाती है तथा इसकी फलियां मटमैली व भूरे रंग में तब्दील हो जाती हैं।
- प्रत्येक पौधे से लगभग 25–30 गुच्छे निकाले जाते हैं।
- आमतौर पर 100 बीजों का वजन 90–110 ग्राम के बीच होता है।

फसल की कटाई के बाद का प्रबंधन :

- खेत से निकाली गई फलियों को 4–7 दिन तक धूप में सुखाया जाता है। तथा इन्हें छाया में सुखाया जाता है।
- आमतौर पर इन बीजों को जूट से बने बोरों में संग्रहण किया जाता है।

पैदावार :

- यदि खेती को बड़े पैमाने पर किया जाता है तो प्रति हेक्टेयर उपज 2.5 से 3.0 टन की दर पर हो जाती है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार
तृतीय तल, आयुष भवन, बी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023
दूरभाष : 011-24651825 | फैक्स : 011-24651827
ईमेल : info-nmpb@nic.in | वेबसाइट : www.nmpb.nic.in

नोट – कृषि प्राद्योगिकी का विकास (क) भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान हस्सारघट्टा लेक, बैंगलुरु–560089, कर्नाटक और (ख) झंडु हैल्थकेअर फाउंडेषन, वापी (गुजरात) द्वारा किया गया है।

कोंच की खेती

सामान्य नाम	:	कोंच
वानस्पतिक नाम	:	मुकुना परुरिएंस
कुल	:	फेबीयेसी
उपयोगी भाग	:	बीज
सामान्य उपयोग	:	इसके बीज टॉनिक, कामोत्तेजना और कंपकपी रोग के निदान में प्रयुक्त होते हैं। बीजों का काढ़ा संधिवात रोगों के ईलाज में भी लाभदायक होता है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

कोंच

मुकुना परुरिएंस
कुल–फेबीयेसी

यह पौधा एक वार्षिक झाड़ी है जो ऊपर की ओर चढ़ती है। इसकी लम्बी बेलें और बालदार पत्ते होते हैं।

जलवायु व भूमि :

- यह फसल हर प्रकार की मिट्टी में उगती है लेकिन, यदि मिट्टी रेतीली व चिकनी हो और नालीदार ढंग से तैयार की गयी हो तो उसमें अच्छी लगती है।
- इसके लिए उप–उष्ण कटिबंधीय और उष्ण कटिबंधीय जलवायु अधिक अनुकूल है जिसका तापमान सर्दियों में न्यूनतम 15 डिग्री सेल्सियस और गर्मियों के महीनों में 38 डिग्री सेल्सियस होना चाहिए।

प्रजनक सामग्री :

- बीज लगभग दो वर्ष तक कारगर (जीवनक्षम) रहते हैं।

नर्सरी तकनीक

बीजों का उपचार और पौध तैयार करना :

- यह फसल बीजों को सीधे खेत में बो कर तैयार की जाती है।
- बीजों को बोने से पहले कवकरोधी (फुंगीसाइड)से उपचार किया जाता है ताकि उन्हें भूमिगत बीमारियों से बचाया जा सके।

खेत में फसल उगाना

भूमि की तैयारी और उर्वरक का प्रयोग :

- खेत को पहले अच्छी तरह से जोता जाता है और उसे भुरभुरा (छद्रीला) बनाया जाता है ताकि बीजों का अंकुरण और उनकी कोंपले बाहर आसानी से निकल सकें।
- जमीन तैयार करते समय मिट्टी में उर्वरक मिलाई जाती है जिसकी मात्रा प्रति हेक्टर 10 से 20 टन पर्याप्त होती है।

फसल लगाने का समय :

- यह बरसात का मौसम प्रारम्भ होने से पहले ही बो दी जाती है।
- बीजों के अंकुरण में 8–10 दिन लगते हैं और उसके बाद पूरा खेत 9 माह में हरे छोटे–छोटे कोमल पौधों से भर जाता है।
- यदि इन बेलों को बांस की छड़ियों का सहारा मिल जाए तो ये आसानी से बढ़ती हैं और इस तरह फसल की पैदावार भी अच्छी होती है।

पौधों में अन्तर रखना :

- पौधों में परस्पर 1.0 X 0.75 या 1.0 X 0.6 सेमी. का अन्तर रखा जाता है, मिट्टी की उपजाऊ क्षमता के अनुसार और यदि पौधों को चढ़ने के लिए सहारा मिले तो इसकी पैदावार प्रति हेक्टेयर 2.5 से 3.0 टन तक हो जाती है।

उत्पादन :

- 140 दिनों के बाद, फसल तैयार होना शुरू हो जाती है जिस पर भूरे रंग की फलियां लगती है। 20 दिन के अन्तराल में 2 से 3 बार इन फलियों को तोड़ लिया जाता है।

सिंचाई :

- शुष्क मौसम में समय पर और सर्दियों में फलियां तोड़ते समय सिंचाई करना लाभदायक होता है।

बीमारी व कीटनाशक

- बीजों के अंकुरण के तुरन्त बाद 'कॉलर राट' की बीमारी लग जाती है। इसकी रोकथाम के लिए पौधों की जड़ों के आसपास 2 किलो ट्रिकोरिक (नीम केक में ट्रिकोडरमा की मिलावट) और 2 किलो सूडोमोनस, जिसे 500 किलोग्राम उर्वरक का मिश्रण तैयार करके डाला जाता है।